शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 13 | उदयपुर शुक्रवार 15 जुलाई 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

उज्जैन के सिहस्थ कुंभ में उदयपुर के ताराचंद गवारिया का एक लाख रूपये से पुरस्कृत फोटो।

यह फोटो गवारिया द्वारा जूना अखाड़ा की तरफ से भूखी माता घाट पर हुई पहली नागा दीक्षा का है जिसमें तेज बारिश में कांपते नागा साधु और भीगता-ठिठुरता हिरण दिखाया गया है।

राजनीति के गुर कोई कटारियाजी से सीखे : किरण नागौरी

गृहमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया कुशाग्र राजनीतिज्ञ और जिन्दादिल प्रबुद्ध कद्दावर नेता हैं। जनता के साथ उनकी स्नेहशील मजबूत पकड़ रहते ही उनका कोई विकल्प नहीं बन पाया। वे निडर हैं। साहसी हैं। पुरुषार्थी हैं और अपने दायित्व के प्रति समर्पण भाव लिए हैं। उदयपुर को श्रेष्ठ और स्मार्टसिटी बनाने में उनके योगदान का योग केवल एक अध्याय का इतिहास नहीं बनेगा। राजनीति के गुर कोई उनसे सीखे। यह कहना है भाजपा के एकनिष्ठ कार्यकर्त्ता किरण नागौरी का जो हाल ही में सहकारिता प्रकोष्ठ के उदयपुर जिलाध्यक्ष बनाये गये हैं।

यहां उनसे हुई एक भेंट में शब्द रंजन के सवाल और उनके जवाब प्रस्तुत हैं-

भाजपा में आप कबसे हैं ?

संघ परिवार में सन् 1980 से 2000 तक कार्य किया। वर्ष 1990 में जोधसिंहजी दाईजी और शिवकिशोरजी सनाढ्य के साथ अयोध्या जेल की हवा खाई। सन् 2000 में भीण्डर पार्षद का चुनाव लड़कर जीता। वर्ष 1993 में जब संघ पर प्रतिबंध लगा तब भी दो दिन वल्लभनगर जेल में रहा।

आपके परिवार के अन्य सदस्यों की क्या स्थिति है ?

मेरे परिवार में मेरे तीन सुपुत्र भरत, मितेश, जितेश हैं। तीनों ही भाजपा के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। यही नहीं, मेरा पौत्र पूर्विश तो जब तीन वर्ष का था तब से ही पथ-संचलन में नियमित रूप से भाग लेता आ रहा है।

अध्यक्ष के रूप में आपकी प्राथमिकताएं क्या रहेंगी ?

सहकारिता का क्षेत्र बहुत बड़ा है। महिला समृद्धि बैंक, अरबन को-ओपरेटिव बैंक, उपभोक्ता थोक भण्डार, ग्रामसेवा सहकारिता समितियां यथा लैंप्स, पेक्स, क्रय-विक्रय सहकारी समितियां ; इन सबके चुनाव होने वाले हैं। ध्यान यह रखना होगा कि इनमें निष्पक्ष, ईमानदार, सेवाभावी समर्पित कार्यकर्त्ता आगे आयें। संगठन स्तर पर पार्टी की छवि बढ़े। सभी कार्यों में पारदर्शिता बनी रहे। पार्टी की नामवरी के साथ-साथ कार्यकर्त्ता का भी मनोबल बढ़े।

देश-दुनिया में सुख्यात डॉ. संगम मिश्रा पुनः भाजपा में

उत्तरप्रदेश को चप्पा-चप्पा भाजपा बनाने के लिए भाजपा के कद्दावर नेताओं ने अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ लखनऊ में विशाल शानदार समारोह में डॉ. संगम मिश्रा को घर वापसी करवाई। डॉ. मिश्रा ने अपनी बेजोड़ कार्यक्षमता, मिलनसारिता, मृदुता, शिक्षाविदता तथा संगठनात्मक कुशाग्र चातुर्य से भाजपा में अपनी जगह बनाई। उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन देश के विभिन्न भागों में 50 से अधिक सेंट्रल अकादमी स्कूल प्रारंभ किये और सुयोग्य शिक्षाशास्त्री के रूप में ख्याति अर्जित की।

उत्तरप्रदेश चुनाव प्रभारी ओम माथुर ने डॉ. मिश्रा के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह से भेंट की। शाह ने उनका स्वागत किया और उन्हें पश्चिमी उत्तरप्रदेश में भाजपा की ताकत लौहस्तंभी करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी। समारोह की अध्यक्षता उत्तरप्रदेश भाजपा अध्यक्ष केशवप्रसाद मौर्य ने की। डॉ. मिश्रा के साथ सादाबाद के पूर्व विधायक प्रताप चौधरी तथा पीलीभीत के पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बुधसिंह वर्मा ने भी पार्टी सदस्यता ग्रहण की।

कुलपति प्रो. सारंगदेवोत को एक कार्यकाल और

प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ; पं. जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में पांच वर्ष के लिए और कार्य करते रहेंगे। सर्च कमेटी ने उनके पिछले कार्यकाल की सर्च-समीक्षा करते हुए यह स्वर्णिम अवसर उन्हें प्रदान किया जिससे सभी छात्रों, कार्यकर्ताओं, शोधार्थियों तथा अध्यापन क्षेत्र से जुड़े प्रबुद्धों में उल्लास व्याप्त हो गया।

पहली बार कुलपति के रूप में उन्होंने विद्यापीठ की बेढ़व नाव संभाली तब सत्ता-तंत्र में भारी उथल-पुथल थी। उन्होंने बड़े संघर्ष और बुद्धि-कौशल से तूफानी किश्ती को किनारे लगाया। सकारात्मक सोच और बड़े धैर्य के साथ उस उलझी हुई कुकड़ी को समता-क्षमता, शौर्य-साहस तथा कौशल-कला से समझभावी सुलझन दी। सर्वथा नवनवोन्मेष देकर विवि का स्वरूप बदला।

सर्वथा नये विषय, विभाग तथा संकाय खोलकर उनकी प्रतिष्ठा बहाल की। हमारे देखते-देखते संस्थाओं की नगरी शिक्षण नगरी के रूप में ऐसी स्मार्ट बनती जा रही है कि उदयपुर में छह विश्वविद्यालय अपनी पैनी आंखों से वैश्विक शिक्षा के बदलते प्रभाव के प्रवाही पहरुए बने हुए हैं। आशा है, उस प्रवाह में श्री सारंगदेवोत अपने प्रभावी रंग की आभा को चमत्कृति देंगे। शब्द रंजन की बहुत-बहुत बधाई।

विद्यापीठ विवि का पेटेंट आवेदन में दूसरा स्थान

उदयपुर। भारत सरकार के कार्यालय महानियंत्रक, एकस्व, अभिकल्प, व्यापार चिन्ह एवं भौगोलिक उपदर्शन के वार्षिक प्रतिवेदन 2014-15 के अनुसार जनार्दन नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर 53 पेटेंट का आवेदन कर, संस्थानों और विश्वविद्यालयों से पेटेंट के लिए आवेदन करने में देश भर के संस्थानों में द्वितीय स्थान प्राप्त कर शीर्ष 10 आवेदकों में शामिल हो गया है।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि देश के औद्योगिक विकास और सर्वांगीण उन्नति का पेटेंट एक अपरिहार्य अंग है जो किसी भी देश की बौद्धिक सम्पदा का संरक्षण करता है। राजस्थान विद्यापीठ में शोध को बढ़ावा देने के विगत चार वर्षों के प्रयासों के परिणाम अब सम्पूर्ण राष्ट्र के समक्ष आने लग गये हैं। इससे समाज के समेकित ज्ञान में वृद्धि होने के साथ-साथ ज्ञान का प्रसार और अविष्कारिता के क्षितिज का भी विस्तार होता है। हालांकि आम लोगों के बीच बौद्धिक सम्पदा जागरूकता स्तर में अभिवृद्धि की और अधिक आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि राजस्थान विद्यापीठ अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पेटेंट के आवेदन पर बल देगा। इस हेतु एक बहुद्देशीय कार्यनीति जल्द ही बनाई जायेगी। ज्ञातव्य हो कि वर्ष 2014-15 के दौरान कई सारे आधारभूत परिवर्तनों के बाद पेटेंट आवेदनों पर कार्यवाही न केवल अधिक दक्ष हुई है अपितु बौद्धिक सम्पदा से सम्बन्धित सूचना का प्रसार और पारदर्शिता भी सुदृढ़ हुई है।

स्मृतियों के शिखर (13) : डॉ. महेन्द्र भानावत

डॉ. सत्येन्द्र के प्रोत्साहन पत्र

डॉ. सत्येन्द्र से ठीक से जुड़ाव तो सन् 1962 के बाद ही हुआ। यों उनसे पहले भी मिलना हुआ हो तो याद नहीं रहा। राजस्थान विश्वविद्यालय में वे हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे और मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत भी उसी विभाग में व्याख्याता थे सो जब भी जयपुर जाना होता वे मुझे सत्येन्द्रजी से उनके घर अवश्य मिलाते। सत्येंद्रजी से ही नहीं, डॉ. सरनामसिंह 'अरूण', डॉ. रामकुमार गुप्त, डॉ. वीरेन्द्रसिंह, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी आदि अनेक लोगों से मिलाया। जितने दिन रहता, प्रतिदिन ही मिलने-मिलाने का कार्यक्रम पहले से ही तय हो जाता। इनमें साहित्य के अलावा सामाजिक, धार्मिक, वाणिज्य, राजनीति एवं पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों के लोग भी होते।

कलामंडल में रहते 1962 में एम.ए. करने पर मैंने राजस्थान की लोकनाट्य परंपरा में गवरी पर शोध करने का मन बनाया तो सत्येन्द्रजी ने और सरनामसिंहजी ने अपने निर्देशन में काम करने को कहा। उन्हीं दिनों उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय में यह कार्य शुरू हुआ तो मैंने यहीं से शोध करना उचित समझा। सत्येन्द्रजी का काम लोकसाहित्य को शास्त्रीय दृष्टि से विवेचन करने का रहा जबकि मैं लोक को आधार मानकर ही लोकसाहित्य का अध्ययन करना चाहता था सो वर्गीकरण का आधार भी मैंने उनकी राय के भरत मुनि को छोड़ ख्याल स्वांग और लीला रूपों को दिया। बाद में तो इन रूपों पर विभिन्न प्रांतों में कई विद्वानों ने अच्छा कार्य किया। इनमें प्रथमत: डॉ. सुरेश अवस्थी, उनकी पत्नी इन्दुजा अवस्थी, जगदीशचंद्र माथुर, रामनारायण अग्रवाल के नाम उल्लेखनीय हैं। बाद में तो यह सिलसिला ऐसा चला कि अभी भी बहता पानी निर्मला बना हुआ है।

डॉ. सत्येन्द्र के ही नहीं, कई विद्वानों के ढेरों पत्र प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य है पर अनायास जो संभल गये वे ही महत्वपूर्ण बने हुए हैं। उनका पहला पत्र 26 फरवरी 1972 का है और आखिरी 21 मार्च 1983 का। कुल 31 पत्र देखता हूं तो सभी का सिलसिला साहित्य केन्द्रित है। मेरे द्वारा संपादित मासिक रंगायन और कलामंडल के प्रकाशन उन्हें नियमित मिलते रहते। वे उनके संबंध में अपना मत-सम्मत ही नहीं लिखते, आवश्यक सुझाव, निर्देशन तथा प्रोत्साहन भी देते। अच्छे लेखन की प्रशंसा करते और अन्यत्र जो अच्छा कार्य हो रहा, उसकी सूचना देते।

डॉ. विश्वंभर व्यास और कुछ साथियों ने मेरे लाख मना करने पर भी अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना बनाई और 8 जनवरी 1976 को डॉ. सत्येंद्र को परामर्शक बनाने को लिखा। उत्तर में डॉ. सत्येंद्र ने लिखा- 'यदि डॉ. भानावत को यह बात पसंद हो तो अवश्य निकालें। अभी तो उन्हें बहुत कार्य करना है। यह ग्रंथ एक सीढ़ा का काम दे सकेगा। मुझे परामर्शक के रूप में रख सकते हैं' और मुझे भी सूचित किया।

मेरे द्वारा प्रकाशित हर पुस्तक पर वे अपनी कोई-न-कोई छोटी-बड़ी टीप अवश्य भेजते। कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर लिखित कठपुतली पुस्तक पर उन्होंने सामरजी को बधाई कहलाते लिखा- सामरजी से अधिक अधिकारी व्यक्ति मुझे अन्य नहीं दिखाई देता जो कठपुतली पर सभी दृष्टियों से लिख सके, जिसने नये प्रयोग किये हों, देश-विदेश घूमकर कठपुतली का महत्व समझा हो और आधुनिक मनोविज्ञान के प्रकाश में उसकी उपयोगिता समझी हो। (पत्र-26.2.1972)

सामरजी के रंगायन में छपे एक लेख की प्रशंसा भी उन्होंने उन्मुक्त मन से की। लिखा- जून 1980 के अंक में सामरजी का लेख आदिम संस्कृति के शत्रु कौन? मुझे बहुत ही अच्छा और बहुत ही उपयोगी लगा। आदिम संस्कृति के शत्रुओं का नग्न चित्र सामरजी ने भलीप्रकार खोलकर प्रस्तुत कर दिया है, जिस पर सभी सांस्कृतिक उन्नयन में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को ध्यान देना चाहिए। सामरजी खूब लिखते हैं, बधाई।

रंगायन के सितंबर 1980 के अंक में गरासियों पर छपे मेरे लेख के संबंध में उन्होंने लिखा- यह निबंध आपकी शैली का अनोखा है और बहुत सूचनाप्रद है। आपका तो सभी लेखन मुझे मुग्ध करता है। आपकी साधना ही उसमें प्रतिफलित होती है। (पत्र-5.10.1980)

यही नहीं, अक्टूबर 1978 के रंगायन के लिए तो उन्होंने लिखा- इस अंक का एक-एक शब्द पठनीय और मननीय है। चित्त प्रसन्न हो गया। इस पत्र में उन्होंने कुछ पृष्ठ विदेशों में लोकसाहित्य लोकवार्ता की चर्चा पर भी रखने का सुझाव दिया और लिखा- जैसे अभी कुछ महीने पहले डॉ. अनूप चंदोला की एक बहुत अच्छी पुस्तक फोक ड्रमिंग इन द हिमालियाज प्रकाशित हुई है जिसमें भाषा वैज्ञानिक पद्धति का अद्भुत उपयोग किया गया है। अपने आप में यह पुस्तक लोक संगीत के वाद्य उपकरणों के अध्ययन की अनुपालन वैज्ञानिक प्रविधि को प्रस्तुत करती है।

यह भी लिखा कि भोपों पर आपने बहुत अच्छा लिखा है। भोपों पर तो आपको मंडल की ओर से एक सचित्र ग्रंथ ही प्रकाशित करना चाहिए। उसकी बहुत आवश्यकता है। आपके पास सामग्री बहुत है। मालती शर्मा के निबंध 'व्यास के निराले ठाटबाट' में कितने ही शब्द ऐसे हैं जिनके अर्थ अपेक्षित हैं। ऐसे शब्दों की व्याख्या पाद-टिप्पणियों में दी जा सकती है।

जब मैंने अपनी काव्य-पुस्तक 'कोई-कोई औरत' भेजी तो उन्होंने लिखा- आपका काव्य-रूप अब कुछ और निखार पर आया है। प्रकाशन भी कुछ बांकपन लिए हुए है। 'अमृतपुत्र जयप्रकाश' के विमोचन समारोह के समाचार रेडियो पर सुनकर उन्होंने 28.6.1978 को लिखा- अब तो आप साके पर साके करने पर तुल आये हैं। सफलताएं आपका निरंतर वरण करें। उसके बाद 30 जुलाई के पत्र में जब यह पुस्तक उन्हें मिल गई तो लिखा- इसमें आपने एक नये काव्य-रूप को जैसे जनम दिया है। लोगों को आरंभ में अटपटा सा लग सकता है। इसी शैली पर कुछ पौराणिक व्यक्तियों पर और लिखिये। आप जो लिखते करते हैं वह मुझे सहज ही अच्छा लगता है।

होली दीवाली जैसे विशिष्ट त्यौहार पर उनका आशीर्वाद मेरे जीवन में नया जोश और ज्योति-शब्द देता। सन् 1980 की दीवाली पर उनका लिखा संदेश- ज्योति पर्व की ज्योति आप सभी के जीवन में ज्योति बिखेरती रहे जिससे आप सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहें तथा निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होते हुए यशवर्धन करते रहें। इससे पूर्व की दीवाली पर उन्होंने लिखा- आपकी प्रतिभा के प्रकाशन के नये-नये रूप मुझे सचमुच अभिनंदन योग्य लगते हैं। ज्योति पर्व का वरदान भी आपको अवश्य मिलेगा। आपका प्रत्येक वर्ष दीवाली के दीपों की भांति तमस को ध्वस्त करता रहेगा और मार्गदर्शक बनेगा।

मेरी गणगौर विषयक पुस्तक पर उन्होंने अपने 12 नवंबर 1977 के पत्र में लिखा-

यह पुस्तक लोकसाहित्य क्षेत्र के लिए एक और ठोस योगदान है। गणगौर पर इतनी अच्छी सामग्री अन्यत्र नहीं मिलती। आपने जानकारी देने वाले माध्यमों का उल्लेख करके सामग्री की प्रामाणिकता बढ़ा दी है। छोटी से छोटी बात का भी आपने उल्लेख कर दिया है। इससे विवरण रोचक भी हो गये हैं। विविध स्थानों की गणगौरों की और तद्‌विषयक क्षेत्रीय वैशिष्ट्यों की भी जानकारी इसमें संजो दी है। इससे पूरे राजस्थान का गणगौर विषयक ब्यौरा सचित्र रूप में सामने आ जाता है। यथा स्थान तो आवश्यकतानुसार गीत आपने दिये ही हैं, अंत में गीतों का एक खंड ही आपने दे दिया है, वह भी संगीत की सरगमों के साथ। ऐसी उपयोगी पुस्तक तैयार कर आपने लोकसाहित्य की जो सेवा की है, उसके लिए बधाई।

कहना नहीं होगा कि डॉ. सत्येन्द्रजी के पत्रों ने सदा ही मुझे प्रोत्साहित किया और लोकसाहित्य को पाठ्यक्रम में स्थान देने-दिलाने का भी प्रयत्न करते रहे। कलामंडल द्वारा आयोजित लोकसाहित्य विषयक संगोष्ठियों में वे आना चाहते हुए भी नहीं आ सके, इसकी पूर्ति एक पुस्तक की बड़ी भूमिका लिखकर की और कहा भी कि इसको मेरी उस संगोष्ठी की उपस्थिति का ही रूप समझें। वे मेरी शोध के गाइड तो नहीं बन सके पर परीक्षक वे ही बने और उन्होंने ही दूसरे परीक्षक डॉ. नगेन्द्रजी से, उनके निवास पर मेरा परिचय कराया। यों बड़ों के साथ बीता हर वक्त स्मरणीय बन जाता है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-

रैडिसन उदयपुर में पैकेज की पेशकश

उदयपुर। रैडिसन उदयपुर द्वारा ठहरने के लिए आकर्षक पैकेज की पेशकश की गई है। होटल के जनरल मैनेजर रिचर्ड बरूआ ने बताया कि होटल के सुपीरियर कमरे में दो रात ठहरने के पैकेज की कीमत 8999 रुपए है और दो रात के लिए पैसे देकर ग्राहक तीसरी रात मुफ्त रह सकते हैं। पैकेज में वेलकम ड्रिंक्स, सुपीरियर कमरे में ठहरना, सीजंस कैफे में बफे ब्रेकफास्ट और डिनर शामिल है। अतिथियों को भोजन और शीतल पेय पर 20 प्रतिशत की छूट भी मिलेगी। लीकर पर 15 प्रतिशत छूट मिलेगी जबकि दस साल तक के बच्चे निशुल्क रह सकेंगे।

ठहरने का दूसरा पैकेज सुपीरियर रूम में एक रात के लिए है और दो वयस्क एक बच्चे के साथ 5999 रुपए में रह सकेंगे। इस पैकेज में वेलकम ड्रिंक्स, बफे ब्रेकफास्ट और इनॉक्स में तीन लोगों के लिए डिनर मूवी, बच्चे के लिए विशेष मेन्यू, गेम जोन में प्रवेश और स्थानीय स्तर पर सैर और प्रमुख जगहें देखना शामिल है।

वागरेचा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा चिकित्सा शिविर आयोजित

शिविर में 172 रक्तदान, 200 दन्त परीक्षण, 130 फिजियोथेरेपी परीक्षण हुए

उदयपुर। स्व. सुन्दरलाल वागरेचा चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से उनकी जयन्ति एवं पुण्यतिथि पर हर वर्ष की भांति 12वीं बार भूपालपुरा मठ के पास 3 जुलाई को विशाल नि:शुल्क रक्तदान, दांतों की जांच, फिजियोथेरेपी, जोड़ों व हड्डियों का परीक्षण, ब्लडशुगर, ब्लडप्रेशर आदि की शहर के विभिन्न चिकित्सकों द्वारा जांच कर नि:शुल्क औषधि वितरित की गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष आकाश वागरेचा ने बताया कि नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में 172 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। 130 लोगों ने अस्थि रोग की जांच करा फिजियोथेरेपी ली।

200 व्यक्तियों ने दन्त परीक्षण कराया, 190 ने ब्लडशुगर तथा 300 से अधिक ने ब्लडप्रेशर व होमोग्लोबिन की जांच कराई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा शहर अध्यक्ष दिनेश भट्ट, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, समाजसेवी विश्वास वागरेचा, भाजपा नेता प्रमोद सामर, मांगीलाल जोशी, दलपत सुराणा, कुन्तीलाल जैन, पार्षद राजेश वैरागी, महावीर सरूपरिया, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष गजेन्द्र भण्डारी, युवा क्रान्ति दल, शिव दल मेवाड़, भारतीय जनता युवा मोर्चा, मेवाड़ी युवा परिषद सहित सामाजिक संगठनों के अनेक लोग उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान जिंक के सहयोग से 504 'खुशी' बाल विकास केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण

राजसमंद। हिन्दुस्तान जिंक के खुशी अभियान से आगंनवाड़ी के बच्चों के स्वास्थ्य लाभ के साथ उनमें गुणात्मक सुधार आएगा। खुशी नाम से बाल विकास केन्द्र सामुदायिक गतिविधियों का केन्द्र बनकर उभरेंगें। ये विचार महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अनिता भदेल ने गायत्री शक्तिपीठ के सभागार में 504 खुशी बाल विकास केन्द्रों के शुभारंभ अवसर पर व्यक्त किये। हिन्दुस्तान जिंक के खुशी कार्यक्रम के लिये आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पन्नाधाय की तरह आंगनवाड़ी के प्रत्येक बच्चें की देखभाल करें। सभी बच्चों के प्रति समान मातृत्व भाव रखें। आंगनवाड़ी सहायिकाएं पूर्ण जिम्मेदारी निभाते हुए बच्चों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सुपोषण को सुनिश्चित करें।

कार्यक्रम में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने घोषणा की कि राजसमंद की 504 खुशी आंगनवाड़ी केन्द्रों को प्रथम चरण में पेयजल की सुविधा उपलब्ध होगी साथ ही पंचायत के माध्यम से जल्द ही बिजली कनेक्शन उपलब्ध कराये जायेंगे।

उल्लेखनीय है कि हिन्दुस्तान जिंक ने राजस्थान सरकार से उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं अजमेर जिलों की 3055 आंगनवाड़ियों को सुदृढ बनाने तथा 6 वर्ष से कम की आयु के ग्रामीण बच्चों को सुपोषण, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएं देने के लिए गोद लिया है। इसके लिए राजसमंद के खमनोर, रेलमगरा और ग्रामीण की 504 आंगनवड़ियों को सुदृढ बनाने के लिये जतन संस्थान को अनुबंधित किया है।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर श्रीमती अर्चना सिंह ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से खुशी बांटने का आव्हान करते हुए किसी प्रकार की समस्या आने पर प्राथमिकता से हल करने को कहा।

हिन्दुस्तान जिंक के हेड कॉरपोरेट कम्यूनिकेशन एवं खुशी अभियान के फाउण्डर पवन कौशिक ने बताया कि खुशी अभियान के माध्यम से ना सिर्फ हिन्दुस्तान जिंक ग्रामीण बच्चों के स्वास्थ्य शिक्षा व पोषाहार में परिवर्तन लाया जाएगा बल्कि वंचित बच्चों के प्रति संपूर्ण देश में जागरूकता पैदा की जायेगी।

कार्यक्रम में सभी अतिथियों ने खुशी अभियान का रिबन खोल कर शुभारंभ किया साथ ही जतन संस्थान के बाल उपहार संकलन अभियान बच्चों की दुनियां एवं गायत्री शक्तिपीठ बेटी पढ़ाओं बेटी बचाओं अभियान संदेशिका का अनावरण भी किया गया। प्रतिकात्मक रूप में भादोला आंगनवाड़ी की कार्यकर्ता को खिलौना बैंक के तहत् खिलौने भी सौंपे गये।

जतन संस्थान के निदेशक डॉ कैलाश बृजवासी ने परियोजना में उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यक्रम में हिन्दुस्तान जिंक की सीएसआर हेड श्रीमति निलिमा खेतान, जिला प्रमुख परेश सालवी, उपजिला प्रमुख सफलता गुर्जर, सभापति सुरेश पालीवाल, भाजपा जिला अध्यक्ष भंवरलाल शर्मा, उपसभापति अर्जुन मेवाड़ा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद सीआर मीणा, कार्यकारी उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास गोविन्द सिंह राणावत सहित हिन्दुस्तान जिंक व प्रशासनिक अधिकारी एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मौजूद थे। संचालन ओमप्रकाश गायरी ने किया जबकि धन्यवाद रणवीरसिंह ने ज्ञापित किया।

गवारिया को बेस्ट फोटो अवार्ड

उदयपुर। उदयपुर के युवा फोटोजर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया को चित्रकूट धाम स्थित रावतपुरा सरकार न्यास की तरफ से सिंहस्थ कुंभ विषय पर आयोजित हुई फोटोग्राफी प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मिला है। इस पुरस्कार के तहत उन्हें एक लाख रुपये नकद प्रदान किए गए। चित्रकूट स्थित रावतपुरा सरकार आश्रम में आयोजित फोटोग्राफी प्रतियोगिता पुरूस्कार वितरण समारोह में प्रथम स्थान प्राप्त फोटो जर्नलिस्ट ताराचंद गवारिया को श्री स्वरूपाचार्य महंतजी और श्री रविशंकर महाराज (रावतपुर सरकार) ने सम्मानित किया। गवारिया को राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त करने पर उदयपुर संभाग के मित्रों तथा मीडियाकर्मियों ने खुशी जताई और कहा कि गवारिया ने अपने फन से फोटोग्राफी जगत में उदयपुर को देशव्यापी पहचान दी है।

'पे-एज-यू-कैन' मॉडल लांच

उदयपुर। बीमा समाधान के वितरण आसान करने तथा भारत में बीमा की पहुंच बढ़े इसके लिए महिन्द्रा इंश्योरेन्स ब्रोकर्स लि.(एमआईबीएल) ने 'पे-एज-यू-कैन' डिजीटली सक्षम मॉडल पेश किया है। इससे ग्राहकों को बीमा समाधान खोजने में मदद मिलेगी, प्रीमियम भुगतान में लचीलापन रहेगा और बीमित अपनी सुविधानुसार प्रीमियम का भुगतान कर सकेंगे। यह मॉडल किसी भी सेवा प्रदाता के लिए सक्षम होगा, जिसमें सस्ती एवं 'टेलर मेड' बीमा कवर उनके ग्राहकों को सहज ढंग से उपलब्ध हो सकेगी। पहले कदम के तौर पर एमआईबीएल ने शीर्ष भुगतान समाधान कंपनी सिट्रस पे के साथ भागीदारी की है।

महिन्द्रा समूह के ग्रुप एक्जीक्युटिव बोर्ड के सदस्य रमेश अय्यर ने कहा कि सिट्रस पे ग्राहकों के लिए डिजाइन किया गया यह व्यक्तिगत दुर्घटना कवर प्राप्त करने के पश्चात, सभी ग्राहकों को अपने मोबाइल वॉलेट से निर्धारित राशि खर्च करने की आवश्यकता होगी। एक बार ग्राहक उस सीमा तक पहुंचते हैं तो, वे अपने नामित के विवरण को एसएमएस या ईमेल के माध्यम से शेयर कर सरलता से इसका लाभ ले सकेंगे। पॉलिसी का विवरण उन्हें भेज दिया जाएगा और उसके बाद वे एक माह के लिए व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा के लिए हकदार हो सकेंगे। यह 'पे-एज-यू-कैन' मॉडल किसी भी सेवा प्रदाता के लिए इस बात के लिए सक्षम होगा कि वह अपने ग्राहकों को एक निर्बाध, परेशानी से मुक्त तथा पारदर्शी खरीद एवं क्लेम अनुभव जो कि एमआईबीएल के भारत में 400 से भी अधिक स्थानों पर विशाल नेटवर्क और इसके इन हाउस ग्राहक सम्पर्क केन्द्र के माध्यम से उपलब्ध करवा सकेंगे।

महिन्द्रा इंश्योरेन्स ब्रोकर्स लि. के प्रबन्ध निदेशक डॉ. जयदीप देवारे ने कहा कि 'पे-एज-यू-कैन' बिजनेस मॉडल भारतीय बीमा उद्योग के वितरण परिदृश्य में व्यापक बदलाव लाएगा। सिट्रस पे के संस्थापक एवं प्रबन्ध निदेशक जितेन्द्र गुप्ता ने कहा कि सिट्रस वॉलेट हमेशा ग्राहकों को सुविधाजनक पेशकशें और मूल्य देता रहा है। इस मॉडल के लांच के साथ ही हम अपने सम्मानित ग्राहकों को सीमित समय के लिए निशुल्क व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा कवर प्रदान कर सकेंगे। रेलीगेयर हैल्थ इंश्योरेंस कम्पनी लि. के प्रबन्ध निदेशक अनुज गुलाटी ने कहा कि हमें सिट्रस जैसे शीर्ष ई-भुगतान प्लेटफॉर्म से जुड़ कर खुशी हो रही है।

वण्डर सीमेण्ट का 'आंगनवाड़ी चलो अभियान, प्रवेशोत्सव एवं खिलौना बैंक' कार्यक्रम

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा औद्योगिक सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत आंगनवाड़ी प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में आज ग्राम पंचायत, फलवा के आंगनवाड़ी केन्द्र फलवा-1, फलवा-2, माल्याखेड़ी, पालड़ी एवं धनोरा में वण्डर सीमेण्ट लि. के वरिष्ठ महाप्रबन्धक महेन्द्र कुमार बोकाड़िया, सरपंच ग्राम पंचायत फलवा शम्भूलाल जाट, उप प्रबन्धक (सी.एस.आर.) हेमेन्द्रसिंह झाला एवं महिला एवं बाल कल्याण विभाग की महिला पर्यवेक्षक श्रीमती अल्का जोशी द्वारा बच्चों को शिक्षण किट प्रदान किये गये।

इस अवसर पर बोकाड़िया ने आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं से अपील की कि वे अपने क्षेत्र के प्रत्येक 3 से 5 वर्ष के बच्चों को आंगनवाड़ी केन्द्र से जोड़ें एवं पूरी लगन के साथ आरम्भिक शिक्षा प्रदान करें। इस हेतु वण्डर सीमेण्ट द्वारा फलवा क्षेत्र की प्रत्येक आंगनवाड़ी में बालमैत्री चित्रकारी कर बच्चों की समझ के अनुसार शिक्षण सामग्री उपलब्ध करवा दी गई है, जिसका यदि पूर्ण उपयोग किया जाये तो बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा।

आंगनवाड़ी केन्द्रों पर शिक्षण किट वितरण कार्यक्रम के साथ ही फलवा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में वण्डर सीमेण्ट लि. के अधिकारियों, स्थानीय सरपंच, विद्यालय के प्रधानाचार्य, स्टॉफ एवं विद्यार्थियों द्वारा 'ग्रीन एण्ड क्लीन निम्बाहेड़ा' अभियान के अन्तर्गत वृक्षारोपण कर विद्यालय को 111 पौधे उपलब्ध कराये गये।

उदयपुर के छात्रों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

उदयपुर। ओलिंपियाड साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित नेशनल साइंस ओलंपियाड में उदयपुर के एम.डी.एस सीनियर सेकेंडरी स्कूल के 11वी कक्षा के छात्र कल्पित वीरवल ने तीसरा रैंक प्राप्त कर ब्रोंज मैडल और दस हजार का इनाम जीता है। विश्व के सबसे बड़े ओलिंपियाड, साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन एसओएफ के द्वारा ओलंपियाड के विजेता छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह दिल्ली में लोधी रोड़ स्थित चिन्मय मिशन ऑडिटोरियम में एक समारोह आयोजित किया गया। इस ओलिंपियाड में उदयपुर के कुल 20000 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी।

इस मौके पर सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज जस्टिस सायरिक जोसेफ और प्रोफेसर वाई एस राजन, गणमान्य प्रोफेसर इसरो पूर्व अध्यक्ष एनआईटी मणिपुर, माइकल किंग डायरेक्टर एक्समिनेशन ब्रिटिश कौंसिल विशिष्ठ अतिथि के तौर पर मौजूद थे।

एसओएफ के संस्थापक एवं एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर महाबीर सिंह ने कहा कि एसओएफने कुछ नए कार्यक्रम भी शुरू किए हैं। इनमें गर्ल्स चाइल्ड स्कॉलरशिप स्कीम के तहत आर्थिक तौर पर कमजोर वर्ग की 300 प्रतिभाशाली बच्चियों को वार्षिक स्कॉलरशिप, अंग्रेजी भाषा में शानदार प्रदर्शन करने वाले 120 छात्रों को नकद स्कॉलरशिप प्रदान करना, कंप्यूटिंग प्रोग्राम में शामिल होने के लिए सिंगापुर भेजना आदि शामिल हैं। महाबीर सिंह ने कहा की समारोह में इंटरनेशनल रैंक के इलावा 6000 स्कूलों के लगभग 79000 छात्रों को राज्य स्तर रैंकों प्राप्त करने के लिए सम्मानित किया गया है।

भारत फायनेंशियल इंक्लूजन लि. ने 1000 छात्रवृत्तियां प्रदान की

उदयपुर। भारत फायनेंशियल इंक्लूजन लि. (पूर्व नाम एसकेएस माइक्रो फायनेंस लि.) ने सांतवें वी. सीताराम स्मृति दिवस पर 16 राज्यों के अर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की प्रतिभावान बालिकाओं के बैंक खातों में चरणबद्ध तरीके से 1000 छात्रवृतियां इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसफर करना शुरू किया। इसके माध्यम से इस वर्ष 2.5 करोड़ रुपए छात्रवृत्ति की रूप में वितरित किए जाएंगे।

तेलंगाना और आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश जस्टिस वी. रामासुब्रमणियम ने 100 छात्राओं के बैंक खातों में छात्रवृत्तियां स्थानांतरित की, जबकि शेष 900 छात्रवृत्तियां 31 जुलाई तक स्थानान्तरित की जाएंगी। न्यायमूर्ति ने इस अवस पर 'जॉय ऑफ गिविंग' पर अपना उद्बोधन दिया। यह छात्रवृत्ति कार्यक्रम सेकेण्डरी स्कूल प्रमाण पत्र (दसवीं कक्षा)/इंटरमीजिएट परीक्षा (12वीं कक्षा) उत्तीर्ण करने वाली प्रतिभाशाली छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए बनाया गया है। यह बालिकाएं कम्पनी की उन 56 लाख महिला सदस्यों की पुत्रियां हैं जिन्हें भारत फायनेंशियल इंक्लूजन लि. ने विश्व में सबसे कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया है।

शब्द रंजन
उदयपुर, शुक्रवार 15 जुलाई 2016

स्मृति ईरानी के चर्चे

यों तो स्मृति ईरानी ने जब से मानव संसाधन मंत्रालय संभाला तब से ही चर्चा में आ गई थी। तब भी लोगों को यह तो लगा ही कि उसे इतना महत्वपूर्ण मंत्रालय पकड़ा दिया है जिसके लिए वह क्षमतावान और उतनी योग्य भी नहीं है।

अभिनेत्री के रूप में लोकप्रिय होना अलग बात है और राजनीति में अपनी प्रखरता दिखाना अलग बात है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कृपा का ही यह आलम रहा कि स्मृति को इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिली पर उस पद पर वह आसीन होकर कोई खूबी नहीं दिखा सकी बल्कि निरंतर विवादित ही रही। विवादों की एक हिलोर थमी नहीं कि दूसरी, तीसरी हिलोर उठती रही।

यह सब कुछ जानते हुए भी प्रधानमंत्री ने बड़े धैर्य और शालीनता से इस मसले को हल किया। अच्छा रहा कि उन्होंने इसे अपनी प्रेस्टिज नहीं माना और लोकतंत्रीय रुख भांपते सांप भी नहीं मरा और लाठी भी नहीं टूटने दी। देशहित सर्वोपरि समझ जिसमें समय रहते समझ आ जाती है वह जन का हार बना रहता है और उसकी कभी हार नहीं होती। नरेन्द्र मोदी भी इसी सत्व के सांचे हैं।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' के अंक 10 में स्मृतियों के शिखर स्तंभ में डॉ. महेंद्र भानावत ने सांवलदान आशिया विषयक आलेख में ओंकारश्री के हवाले से एक घटना का उल्लेख किया किंतु उनके संग्रह में ओंकारश्री के लिखे कई पत्रों में आशियाजी विषयक उस घटना को रेखांकित करता अश्रु-लेख ही मिल गया। 18 मार्च 2004 को लिखा वह टीप-लेख यहां दिया जा रहा है-

दर्द भरे बोल कविवर सांवलदानजी आशिया के

वयोवृद्ध आशुकवि डिंगलकाव्य छंदविधान के गुणनिधान स्व. सांवलदानजी आशिया एक अल सुबह मेरे भूपालपुरा वाले किराये के घर आए। उनके हाथ में एक थैला। थैले में कवि प्रणीत 'महाभारत रूपकम्' (डिंगल छंदों का शास्त्रीय विवेचनपरक ग्रंथ)! देश पर लागू आपातकाल के कठिन दौर की अकाल बेला में, आशियाजी ने फफकते स्वरों में कहा- 'श्रीजी मैं तो श्रीहीन हो गया। मेरे ग्रंथ की पांडुलिपि राजस्थान साहित्य अकादमी वालों ने अस्वीकृत अवस्था में मुझे लौटा दी है। मेरी तो जीवन भर की साधना मिट्टी में मिल गई। आपने अकादमी सेवाकाल में इसे स्वीकृत कर अकादमी की ओर से प्रकाशित करने का लिखा था। अब इमरजेंसी की 'किटकी' पड़ गई मुझ पर। अब क्या करूं इस पोथे का? आपकी सेवामें खाक में मिलाती यह आपातकाली डाकण अब मेरा 'भख' करने पर तुली है। आपके घर मैं, अपनी इस डिंगल छंद भाष्यपरक काव्य व्याख्या का श्राप झेलता इसका 'स्यापा' डालने आया हूं। मेरी पगड़ी की लाज लुट गई। घर के 'माटे' में से उठाई है इसे, यह तो गई। आपके सिवा किसके आगे रोवूं रींकूं? घर में भू........ख ही भू........ख। जो मुझमें बीती है ऐसी तो बैरी में भी न बीते।'

मैंने आंसुओं में डूबे आशियाजी को छाती से लगा ढाढ़स बंधाया। नहला-धुला उनकी भोजन-सरभरा सार, मैंने उन्हें लूह बरसाती भयंकर गर्मीवाली धोली दुपहरी में साथ लिया और आकाशवाणी, उदयपुर पहुंचा। मन में आक्रोश था मेरे कि इस डिंगल के युग कवि को आकाशवाणी में आज तक कभी बुलवाया ही नहीं गया। श्री आशियाजी मन के भोले, बोले मुझे, आप छोड़कर यहां से चले मत जाना। आशियाजी को मिलवाया आकाशवाणी के निदेशक से, राजस्थानी-हिंदी प्रसारण अधिकारी श्री भटनागरजी से। आशिया से लिखवाये 5-6 गीत मैंने। उन्हें कांट्रेक्ट मिला। आगे का सिलसिला बंधा।

आकाशवाणी से घर साथ ले आया उन्हें और बोला, न अपील, न वकील, न दलील! मैं भी जे.पी. आंदोलन की चपेट में जमीन और आसमान के बीच में हूं। मैं कहां जाऊं? एक बात सुन, बार-बार देवालाल पालीवाल, ब्रजमोहन जावलिया, नेमनारायण जोशी, नारायणसिंह भाटी के नामों को बोल-बोलकर काया मत छिजाओ। यह ग्रंथ चूहों और दीमकों का आहार न बन जाय। भारी मन से अपने गाव कड़िया (नाथद्वारा के पास) की ओर जाने लगे आशियाजी तो उनके पांव जाम हो गये। मैं समझ गया पीड़ा। वे नहाने गये थे तभी मैंने उनकी जेब में 100 रूपये डाल दिये थे। मैंने कहा, जेब संभाले रखना। आशियाजी पीड़ा की इस दुखदायी घड़ी में हंस पड़े। जेब न लरेब। थें ही आछी मसखरी करो। यह बोलते उन्होंने जेब में झांका और फिर उनकी आंखें तर हो गई। वो दिन और आज का दिन। अब न आशियाजी रहे और सुना है अब उनका 'स्यापा ग्रंथ' संभवत: कालशरण हो गया।

-ओंकारश्री, उदयपुर

विगत छह माह से मैं अपनी धर्मपत्नी के इलाज हेतु मुंबई में था। लौटकर शब्द रंजन के अंक पढ़ने को मिले। बच्चनजी के 30 पत्रों में आपने श्री नारायणकृष्ण 'अकेला' का उल्लेख किया। मैं सन् 1996 में जब चित्तौड़गढ़ में जिला अधिकारी के पद पर था तब वे रावतभाटा के पास एक सीनियर सैकण्डरी स्कूल में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत थे। वे अच्छे कवि थे पर बाद में मानसिक रूप से परेशान हो गये जिसके कारण काल के ग्रास बन गए।

-डॉ. श्याममनोहर व्यास, उदयपुर

'शब्द रंजन' के हर अंक में आप कुछ न कुछ नया, अनजाने को जताने का भागीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। दिवंगत अनजाने लेखकों से परिचय करा सच्ची श्रद्धांजलि देना प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। मनुष्य के साथ-साथ प्रकृति-प्रवृत्ति पर भी संवेदनापूर्ण विचार मिलता है। भले वह कान्यो-मान्यो के माध्यम से हो। आज मनुष्य के बारे में विचार करने की फुर्सत नहीं, वहीं आप द्वारा महावतवाड़ी में जा पुराने महावत से मिलकर हाथी की प्रकृति-प्रवृत्ति पर चर्चा करना अच्छा लगा।

कल्लाजी और लोकदेव हरदौल किसी समाचारपत्र में छप जाने से अभिजनों में विशेष असर भले न हो पर बुद्धिजीवी जन के समक्ष आप ये सब चीजें सहज सामने लाते हो, यह प्रशंसनीय है।

-रामदयाल मेहरा, उदयपुर

पोथीखाना

समयसार पर शोध-बोधपूर्ण सटीक विवेचन

आचार्य कुंदकुंद विरचित समयसार एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक व दार्शनिक ग्रंथ है। प्राकृत भाषा के इस प्राचीन ग्रंथ पर अनेक विवेचन और व्याख्यान हुए हैं। अब इसमें अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का सरल व सटीक विवेचन भी जुड़ गया है।

उनके द्वारा समयसार पर लिखित शोध-प्रबंध का नाम है - 'समय और समयसार '। उन्होंने पाँच अध्यायों के बीस परिच्छेदों में समयसार का विश्लेषणात्मक और समीक्षात्मक परिशीलन किया है। इस शोधपूर्ण और बोधपूर्ण लेखन में अनेक नई दृष्टियाँ और नये सन्दर्भ हैं। इस अनुसंधानपरक लेखन में संभवत: पहली बार श्वेताम्बर आगमों व ग्रंथों के प्रचुर संदर्भ भी दिये हैं। जैनविद्या मनीषी डॉ. दिलीप धींग के बहुआयामी और सम्प्रदाय मुक्त विवेचन से यह शोधग्रंथ सबके लिए सदैव पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बन गया है। रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी (सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001) द्वारा प्रकाशित यह 360 पृष्ठीय ग्रंथ 40 प्रतिशत छूट के साथ मात्र तीन सौ रुपये में उपलब्ध है।

- डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया

घर को लेकर घर-घर की कविता

'खड़े रहते हैं घर' डॉ. मालती शर्मा का नवीनतम काव्य संग्रह है जिसमें उन्होंने केवल घर को महसूस किया हैं। इसके पहले उनका 'कहाँ गये घर' काव्य संग्रह भी आ चुका हैं जिसमें घर की तलाश थी। अब वे महसूस करती है कि घर तो वहीं खड़े है जहां थे। मनुष्य का मानस बदल गया हैं। जो घर को घर नहीं रहने देना चाहता हैं। वह मन की शांति घर से बाहर ढूंढ़ना चाहता है। ऐसे में मालती जी कहती है -

जो आलिशान घरों में रहता / धीरे-धीरे अपने घर से / बेघर होता जा रहा है / घरों में खुली जगह कम हुई है / पहले आंगन हुआ करते थे / अब होती है बालकनी।

स्त्री देश की परम्परा है। उसी से घर है। मैं परम्परा हूं कविता में कितनी ताकत से कहती हैं मालतीजी-

मैं परम्परा हूं / घर, परिवार, समाज की / विश्व की / अतीत और वर्तमान / दो किनारों के बीच बहता / मेरा जल प्रवाह है / मैं स्त्री हूं / मैं घर हूं।

घर कहीं नहीं आते - जाते। सुबह का भूला भी घर को लौटता है शाम को। वह भूला नहीं होता। मालतीजी को पूरा भरोसा है कि घर ही वह जगह होती है, जहां से मनुष्य अपने जीवन में शिखर बना सकता है। घर संस्कृति का केन्द्र है, जहां से पृथ्वी के अंत तक सूर्य का प्रकाश फैलता रहेगा। तब मालतीजी नहीं होगी, मालतीजी की कविता रहेगी।

-वसंत निरगुणे

पीआईएमएस के सर्जक डॉ. सामर सम्मानित

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल उमरड़ा के सर्जरी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एस. के. सामर को सम्मानित किया गया। पीआईएमएस के वाइस चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की ओर से विश्व जनसंख्या दिवस पर भोपाल नोबल्स कॉलेज में आयोजित हुए जिला स्तरीय समारोह में पीआईएमएस के सर्जरी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एस. के. सामर को वर्ष 2015-16 में सर्वाधिक ऑपरेशन हेतु सम्मानित किया गया।

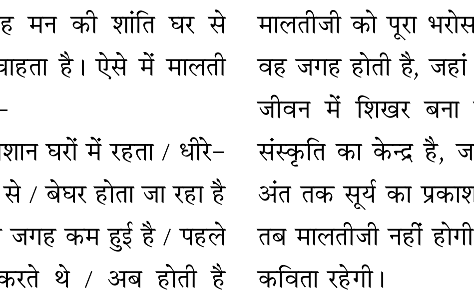

अग्रवाल ने बताया कि डॉ. सामर को गत वर्ष भी जनसंख्या स्थिरीकरण, मातृशिशु एवं परिवार कल्याण सेवाओं के लिए प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया था। डीन डॉ. ए.पी. गुप्ता ने बताया कि समारोह में सांसद अर्जुनलाल मीणा, ग्रामीण विधायक फूलचंद मीणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, महापौर चंद्रसिंह कोठारी, प्रमोद सामर, तखतसिंह ने डॉ. सामर को सम्मानित किया। समारोह में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव टांक एवं अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रागिनी अग्रवाल ने आगामी वर्ष की कार्ययोजना प्रस्तुत की।

साहित्यिक पुरस्कारों की घोषणा

सलूंबर की सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी ने सूचित किया कि हिन्दी-राजस्थानी के 8 लेखकों के अलावा मेवाड़ गौरव तथा सलूम्बरश्री पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। इसके अनुसार बाल-काव्य में नरेन्द्र श्रीवास्तव, बाल-कहानी में डॉ. मंजरी शुक्ला, हिन्दी-कहानी में डॉ. अखिलेश पालरिया, हिन्दी गीत-कविता में संगीता सेठी, राजस्थानी बाल-कहानी में सावित्री चौधरी, बाल-कविता में माणक तुलसीराम गौड़, राजस्थानी लघु-कहानी में पवन पहाड़िया, गीत-कविता में नरपतसिंह सांखला को चुना गया है। 'मेवाड़ गौरव' अलंकरण सत्यनारायण समदानी, सलिला विशिष्ट साहित्यकार सम्मान सुधाकर अदीब एवं नीलिमा टिक्कू तथा सलूम्बरश्री सम्मान जयचंद रायकीया को प्रदान किया जाएगा।

बढ़ती अर्थव्यवस्था का प्रतीक झारखंड

उदयपुर। झारखंड, पूर्वी भारत की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। प्रदेश सरकार के 15 महीने की कार्यावधि के दौरान, कानून-व्यवस्था की कोई भी बड़ी समस्या नहीं रही है और अगले 4-5 वर्षों में, झारखंड पूरी तरह से बदला हुआ राज्य होगा। क्षेत्र विशेष से जुड़ी हमारी सभी लागू नीतियां गतिशील एवं लचीली हैं। यह बात झारखंड के मुख्यमंत्री रघुबर दास ने मुम्बई में आयोजित झारखंड निवेश प्रोत्साहन बोर्ड (जेआईपीबी) की उद्घाटन बैठक में कही।

उन्होंने कहा कि हमें डीआईपीपी के व्यावसायिक सुधारों एवं अपेक्षाओं को हासिल करने की सफलता की बेहद खुशी और उत्साह है, हम साफ-साफ और सीधे तरीके से इन प्रणालियों पर विचार रखने के लिए इंडस्ट्री के प्रतिनिधियों को बुलाते हैं, ताकि हम पूरी तरह से अनियमितताओं को दूर कर सकें और उन्हें अधिक प्रतिक्रियात्मक, विशाल एवं दीर्घकालिक बना सकें। हमारा उद्देश्य प्रणाली अनुपालन एजेंडा को सर्वश्रेष्ठ बनाना है और हम झारखंड में सबसे आशाजनक निवेश प्रस्तावों को लाने का प्रयास करेंगे। प्रदेश की प्रगति एवं इसके विकास में निवेशक हमारे सहयोगी हैं, मुझे विश्वास है कि अवधारणों के स्तर पर उपयुक्त स्वरूप ले लेने के पश्चात यह सार्थक होगा।

वेदांता रिसॉर्सेज के ग्रुप सीईओ टॉम अल्बानीज ने राज्य की अपनी स्वयं की तकनीकी क्षमताओं पर जोर देने की बात कही, ताकि शोध एवं विकास में विवेकपूर्ण निवेश के जरिए आगे बढ़ा जा सके। उन्होंने कहा कि नये निवेशकों को रिझाने के लिए प्रदेश को वैश्विक खनन सम्मेलनों में अतिसक्रियतापूर्वक हिस्सा लेना चाहिए। अदाणी समूह के प्रबंध निदेशक राजेश अदाणी ने प्रदेश की सकारात्मक ब्रांडिंग की आवश्यकता पर जोर दिया।

आस्था का युगमराग

सह-शब्दों की शक्ति

-डॉ. मालती शर्मा-

इस विश्व की किसी भी वस्तु के रंग, रूप, आकार के विकास, निखार, विस्तार, प्रभाव, भराव और रिसाव की परिपूर्णता को व्यक्त करते सह-शब्द सभी भाषा-बोलियों में मिलते हैं। लोकपरंपरा में अभिव्यक्ति की परिपूर्णता और उसकी चरम स्थिति बताने की अपार शक्ति सह-शब्दों के कारण निखार पाती है।

हमारा लोक अपनी बोली-बानी में दैनंदिन व्यवहार की भाषा, बोलचाल में ऐसे शब्दों का बेहिचक धड़ल्ले से और सटीक प्रयोग करता है। यदि किसी का चरम पर पहुंचा हुआ गोरापन बताना है तो तुरंत कहा जाता है- अरे ब्वाली भैनि, बु तौ गोरी गट्ट है देखत, रहि जाउगे। यदि किसी महाराष्ट्रीयन को अपनी गौरांगा पत्नी का गोरा वर्ण और करनी करतब दोनों बताने हों तो वह गोरी के साथ पान जोड़कर कहेगा- क्या पूछते हो हाल चाल- घरात घान दारात घान / बायको माझी गोरी पान।

अर्थात् घर भी गंदा द्वार भी गंदा पर मेरी पत्नी खूब गोरी-गोरी पान है। यहां गट्ट और पान दोनों गोरेपन के साथ जुड़े सह-शब्द हैं पर इन दोनों शब्दों का कोई अर्थ नहीं है। काले के साथ कारौ कुट्ट। कट्ट शब्द आता है। अंधेरे की पूर्ण गहनता के साथ लोकमनीषा ने घुप्प जोड़ा है। कुड़वे रस के साथ कड़ओ जैहर।

रंगों की खासकर हरे रंग की कितनी ही छवियां होती हैं। हिंदी अंग्रेजी में इन्हें तोतई, धानी, पैरट ग्रीन, सी ग्रीन, बाटल ग्रीन कहकर पहचाना जाता है पर हरे रंग की परिपूर्णता के लिए लोक परंपरा हरे के साथ कच्च शब्द जोड़ती है और महाराष्ट्र की लोकपरंपरा ऐसे चरम हरे रंग को हिरवागार कहती है। अंधेरा तो अंधेरा है पर वह कितना गहरा है। उसके अंधेरेपन की सर्वोच्च सीमा के लिए लोक परंपरा जहां उसे घुप्प अंधेरा कहती है वहीं लाल रंग की चरम स्थिति से ऊपर की बात कहनी हो तो उसके साथ लाल भड़क शब्द आता है।

कभी-कभी लोक के वाणी-व्यवहार में लोकपरंपरा में चरम परिणति की अभिव्यक्ति के लिए समानार्थी शब्द भी किसी शब्द के साथ आते हैं जैसे काला के साथ जुड़ा शब्द स्याह है। स्याह का अर्थ भी काला है। पीले के साथ सह-शब्द जर्द मराठी में पिवलो धमक है। लाल के साथ भी सह-शब्द सुर्ख समानार्थी शब्द है। मराठी में सफेद के साथ आता ऐसा ही समानार्थी शब्द पांढरा शुभ्र है।

किसी भी स्थिति की कमतर स्थिति को व्यक्त करने के लिए भी लोकपरंपरा, लोकमनीषा के पास सह-शब्द हैं। उनमें बहुप्रचलित और कई रूपों में काम में आने वाला शब्द सा, स्त्रीलिंग सी है। कोई व्यक्ति न तो पूरी तरह थका है न तरोताजा ही। न सोया है न जागा ही है। ऐसी दशा को व्यक्त करने के लिए थका के साथ सा सह-शब्द जुड़ता है- थका-थका सा, सोया-सोया सा, भरी-भरी सी, बुझी-बुझी सी। यथा अब तुम्हें कहा बता में बु तौ भरी-भरी सी लगि रही। सा और सी सह-शब्द का प्रयोग तो साहित्य में भी खूब होता है।

शब्दों के साथ आते सह-शब्दों में गट्ट, कट्ट, धमक जैसे बहुत से शब्द हैं जो निरर्थक हैं पर शब्दों के किसी रूप के साथ आकर उसे अपने अकेले रूप की अपेक्षा विशेष, कई गुना, अर्थवान बना देते हैं। जो मजा हरा कच्च, लाल भड़क, लाल सुर्ख में है वह सिर्फ लाल में कहां?

ऐसे सह-शब्द हमें लोकभाषा में, बोली-बानी में तो पग-पग पर मिलते ही हैं साहित्य में भी जहां-तहां प्राप्त होते हैं। निरुक्त में इनकी व्युत्पत्ति पर किया विचार खोजा जा सकता है।

भाषा वैज्ञानिकों ने ऐसे शब्दों को क्या नाम दिया, क्या कहा जाय, मुझे ज्ञात नहीं पर प्रख्यात आलोचक और भाषाशास्त्री डॉ. रामविलास शर्मा से जब वे आगरा में थे प्रात:कालीन भ्रमण के दौरान एकदिन अपनी उत्सुकतावश जब इस विषय पर चर्चा की और इन शब्दों की अर्थ-गर्भिता को समझने का प्रयास किया तो उन्होंने बताया कि ये शब्द विश्व की सभी भाषाओं में हैं। एक पाश्चात्य भाषाशास्त्री एम. नाउ ने इन्हें ईको वर्ड नाम दिया है।

न जाने कब से एकत्र किये ब्रज, बुंदेली, मालवी, निमाड़ी और मराठी शब्दों की लंबी सूची मेरे पास थी जो आज लिखित रूप में मिल नहीं रही है। परिवेश के प्रसाद रूप अभी प्राप्त मराठी के कुछ शब्द दे रही हूं- सफेद- पांढरा शुभ्र। हरा-हिरवागार। काला-काळे कुट्ट। पीला-पिवळे धमक। नीला-नीळो शार। लाल- लाल भड़क। लोकपरंपरा में शोध के प्यासे लोगों के लिए लोकसंस्कृति का यह एक अछूता और उर्वर विषय है।

डॉ. भानावत को यशस्कर सम्मान

श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् द्वारा कांकरोली में 9 जुलाई को आयोजित पाटोत्सव मनोरथ समारोह में डॉ. महेन्द्र भानावत को यशस्कर सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर परिषद के अध्यक्ष फतहलाल गुर्जर 'अनोखा' का सबरंग बोलबाला रहा। सम्मान प्रशस्ति में उनके द्वारा कुंडलिया-कथन मनोरम रहा।

बड़ा आदमी है वही, जिनका हो गुणगान।
भानावत छोटे लगें, पर हैं बड़े महान।।
पर हैं बड़े महान, भारती लोक कला में।
लिख डालें हर विषय, हो गये सिद्ध जिला में।।
उनको किया परास्त, जो इनसे अड़ा आदमी।
डॉक्टर श्री महेन्द्र भानावत बड़ा आदमी।।

समारोह के अध्यक्ष पर्यटन एवं धरोहर संरक्षण समिति सचिव टी.सी. बोहरा, मुख्य अतिथि जे.के. टायर फेक्ट्री के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल मिश्रा तथा विशिष्ट अतिथि नगर परिषद सभापति सुरेश पालीवाल थे। प्रारंभ में स्वाति यादव, कामना पालीवाल तथा मनस्वी व्यास द्वारा द्वारकाधीश वंदना, सरस्वती वंदना तथा हवेली संगीत की स्तुति-प्रस्तुति ने सबको मगन-मोहित कर दिया।

रिन ने 5 लकी विजेताओं को प्रियंका चोपड़ा से मिलवाया

उदयपुर। रिन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में उपभोक्ताओं के लिये एक प्रतियोगिता आयोजित की गई और कॉन्टेस्ट के 5 भाग्यशाली विजेताओं के लिये मीट एंड ग्रीट कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत इन विजेताओं को बॉलीवुड की सुपरस्टार प्रियंका चोपड़ा से मिलने का मौका दिया गया। रिन ने जय गंगाजल के साथ मिलकर इस साल महिला दिवस पर एक विशेष एंथम लॉन्च किया था। प्रियंका चोपड़ा ने एक एम्पावरिंग म्यूजिक वीडियो में एंथम को लॉन्च किया।

विपुल माथुर, कैटेगरी हेड कोर लॉन्ड्री, एचयूएल ने कहा कि रिन ने एक ब्रांड के रूप में हमेशा विश्वास किया है कि हर कोई प्रतिभाशाली है और अक्सर उनकी राह में अवसरों का अभाव या अन्य लोगों की पूर्वधारणायें बाधा बनती हैं। हमारे आस-पास कई महिलायें हैं, जो इनसे मुकाबला करती हैं और विजेता बनकर उभरती हैं। जय गंगाजल जैसी एक वूमेन एम्पावरिंग फिल्म और प्रियंका चोपड़ा जैसे रोल मॉडल के साथ सहयोग करना महिलाओं के असली जोश को सम्मानित करने के लिये रिन का सर्वश्रेष्ठ तरीका था।

प्रियंका चोपड़ा ने कहा कि रिन एंथम मेरे दिल के बेहद करीब है और मुझे इस सहयोग का हिस्सा बनने पर गर्व है। रिन एंथम फिल्म के सार के साथ जुड़ाव स्थापित करता है और फिल्म के लिये बिल्कुल उपयुक्त है। प्रकाश झा ने कहा कि रिन एंथम में फिल्म का सार प्रदर्शित होता है और यह फिल्म के लिये बिल्कुल अनुकूल बन गया है। मुझे और संगीत निर्देशकों- सलीम-सुल्तान दोनों को ही इस पर काम करने में मजा आया और हम रिन डिटर्जेंट के साथ इस सहयोग को लेकर बेहद गर्व महसूस करते हैं।

कान्यो मान्यो

सम्मानों का अद्‌भुत समारोह

धूलपोट सम्मान लेकर कान्यो लौटा ही था कि मान्यो मिल गया। बोला, रे कान्यो, लगता है कहीं बड़ा हाथ मारा है। कान्यो बोला, पिछले पचास वर्षों से चौखले में बड़ा नाम किये संस्था ने धूलपोट सम्मान देकर मान बढ़ाया है। मान्यो सम्मान का नाम सुन अचरज में पड़ा। पूछा, ऐसा सम्मान पहलीबार ही सुना। कान्यो ने कहा- शॉल, दुपट्टा, नारेल तो बड़ा कोमन हो गया सो किसी पवित्र नदी की धूल का पोट दिया। मेरे से जूनियर था उसे धूलफांक नाम से छोटी सी पुड़िया पकड़ा दी।

मान्यो समारोह बाबत् जानने को उत्सुक था। कान्यो ने विगतवार सुनाया। समारोह में सम्मानदाता के परिवार, मुखियाओं का भावभीना स्वागत तो था ही पर उनके घर में वर्षों से पल रही गंगेश्वरी का भी सम्मान किया। मान्यो बोला, यह गंगेश्वरी कौन? कान्यो का जवाब हाजिर था, गाय थी, भींडी गाय जिसके दोनों सींग घोड़े की नाल जैसे मुड़े हुए थे। छह बेंत ब्याणी हुई थी और उसके रहने से पूरे घर में आनंद मंगल बरस रहा है। उसके गले में चुनरी और पीठ पर दुशाला डाल बड़ा सा तिलक किया। परिजन गद्‌गद् थे। गाय भी मौनी अमवस्या में थी।

सम्मान की खास बात यह रही कि संस्था को 50 वर्ष पूरे होने पर 71 आदमियों का सम्मान किया गया जो विविध क्षेत्रों के थे। साहित्य कला क्षेत्र से धूलपोट और धूलफांक सम्मान ही था। शेष सम्मान जिनको दिये गये उनमें मुख्य थे-कबाड़चंद, फकीरीबाई, आमजीभाई फामजी, रांका-बांका जूतेवाला, अंधालाल अंगूरवाला, जामुनदास जरीवाला, कमलेंदु कलाकंदी। जिस नाम से सम्मान दिये गये वे भी बड़े पहुंचे हुए नाम थे जैसे- जोकरभाई ठोकर चौराहा सम्मान, राइणचंद निमोली सम्मान, हाथीभाई हस्तमतुन सम्मान, जरबोदय अन्त्यज सम्मान, खिड़कीमल झिड़कीवाल सम्मान, धमणलाल पाजामा बाईदासा सम्मान, रांटल्या दांतल्या दसेरी सम्मान, नाड़ेलाल पाड़ेलाल पंपोड़ी सम्मान, साइकिलमल पंचरमल कीली निकली सम्मान, केरीमल गूंगणादास गुठली सम्मान, रातामल रतौंधी रचका सम्मान, बाटलीमल टाटली दालचीनी सम्मान, तूंबालाल रत्तूमल स्वामी सम्मान, बांतड्यालाल कोकरेचा सम्मान, मच्छरी फूंदी लंबूदरी सम्मान, बांकेलाल-रांकेलाल जांटल सम्मान, रोड़ीला-राबड़ीला फोंतऱ्या सम्मान।

यह सुन कान्यो मान्यो दोनों बड़े खुशमिजाज गले हुए। ऐसा सम्मान और सम्मानपाये व्यक्ति तथा सम्मान नाम पहलीबार ही सुनने को मिले। जिन्हें कभी कोई सम्मान हाथ नहीं लगा हो उनके लिए कोई सा सम्मान स्वर्णिम ही होता है।

मतलब का संवाद रहा अब

मतलब का संवाद रहा अब
अपनापन नहीं याद रहा अब।
मतलब का संवाद रहा अब।
सोने के पिंजरे में जकड़ा
पंछी कब आजाद रहा अब।
विश्वकरण की चाल में उजड़ा
मानव कहां आबाद रहा अब।
दिल में उन्हें बसाने खातिर
ना इतना उन्माद रहा अब।
पहले सी फसलें नँह निपजत
बीज न वैसा खाद रहा अब।
हमने सारी कथा बदल दी
नहीं मूल अनुवाद रहा अब।
मीठी वाणी वशीकरण है
मंत्र दयाला साध रहा अब।

-रामदयाल मेहरा

हमारे पास

शब्द-रंजन है

अर्थ-रंजन नहीं

आपके पास जो भी है

कृपया सहयोग करें।

-डॉ. तुक्तक भानावत-

मो. 9414165391

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur,

a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845,

a/c type- Current a/c)

स्मृति शेष

अनोखे आत्मीयजन थे शचीन्द्र उपाध्याय

शचीन्द्र उपाध्याय से अधिक मिलना तो नहीं हुआ पर जब-जब भी मिलना हुआ, मधुर याद देते रहे और लंबे अंतराल के बाद भी विस्मृत नहीं हुए। कोटा से जब-जब निकला, उनकी याद सताती रही। एकबार छतरपुर गया। लौटकर मैंने उन्हें चिट्ठी लिखी तब वर्षों पूर्व की आत्मीयता उन्होंने ऐसे छलकाई जैसे हम मिले नहीं पर हमारी घनिष्टता बरकरार है। मेरी चिट्ठी के जवाब में उन्होंने 19 मार्च 2009 को जो पत्र लिखा वह यहां प्रस्तुत है। अब वैसे अनोखे आत्मीयजन मिलने मुश्किल ही हैं।

परम आदरणीय डॉ. भानावतजी,

प्रणाम स्वीकारें

आपका 26.2 का कृपा पत्र आज मिला। पढ़कर बेहद खुशी हुई। आपने कृपा करके मुझे याद किया और पिछले वर्ष से ही याद करते रहे हैं। उसके लिए मैं हृदय से कृतज्ञ हूं। आप जैसे सुहृद मित्र मेरे जीवन के संबल हैं जिन्हें मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकूंगा।

मेरा लेखन निरंतर चल रहा है। जीवन के 75 पड़ाव लांघ आया हूं, 76वां चल रहा है। जो कुछ लिख सका हूं, आपके सामने है। अब भी आप जैसे सुहृद मित्रों की शुभकामनाएं हैं जो लेखन को विराम नहीं मिल पाया है। आठ उपन्यास और चार कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं। एक अन्य उपन्यास हाथ में है। शायद जल्दी ही पूरा हो जाएगा।

आप छतरपुर कोटा होकर गए और मुझे दर्शन नहीं दे सके, इसका मुझे दुख है। आपको यदि दुबारा ऐसा अवसर मिले तो पूर्व में मुझे सूचित कर दें। मेरी पत्नी का पांच वर्ष पूर्व देहांत हो गया था। दो पुत्र हैं। दोनों ही नौकरी में हैं। बड़ा पुत्र बैंक में है और छोटा रेलवे में। आपकी नजर से संभवत: शरद उपाध्याय का नाम गुजरा हो। शरद मेरा छोटा पुत्र है और व्यंग्य एवं कहानियां खूब लिख रहा है। उसकी कहानियां 'समकालीन' और 'हंस' प्रभृति पत्रों में प्रकाशित हो रही हैं। दो व्यंग्य संग्रह भी प्रकाशित हैं।

आपको मैं भी पढ़ता रहता हूं। कई व्यक्ति होते हैं जो जीवन के इस पड़ाव पर आकर ठहर जाते हैं लेकिन ईश्वर की महत्ती कृपा है जो हम लोग अब भी लेखन में सक्रिय हैं।

मंगल सक्सेना आजकल शायद उदयपुर में ही कहीं हैं। यदि भेंट हो जाय तो उन्हें मेरा प्रणाम कह दीजिएगा और यदि संभव हो सके तो उनका उदयपुर का पता दे दीजिएगा।

शेष कृपा बनाए रहें। कभी-कभी पुराने मित्र याद कर लिया करते हैं। इससे जो खुशी मिलती है, उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। सारी देह गद्‌गद् हो जाती है। आपने कृपा करके मुझे याद किया, इसके लिए पुन: आभार स्वीकारें। घर पर सब कुशल होंगे।

सदैव आपका

शचीन्द्र उपाध्याय

जैसे चुनाव में डूबे, नदी में डूब गये

एक नेताजी
बड़े फख्र के साथ
बहती गंगा में हाथ धोने
बेखौफ जमुना नदी में कूद गये,
जैस हमेशा चुनाव में कूदते थे।
वे नदी में कभी बैठते थे,
कभी खड़े हो जाते थे,
जैसे चुनाव में होते थे।
नदी की धारा कुछ तेज थी,
उनके होश उड़ने लगे,
जैसे चुनाव परिणाम के समय उड़ते थे।
राजनीति में जैसी हवा चलती थी
वैसा ही वे रूख कर लेते थे।
दल-बदल से
कुछ न कुछ हथिया ही लेते थे।
उसी तरह नदी में
जिधर लहर उमड़ रही थी
उन्होंने उधर का ही रूख कर किया।
लोभ संवरण न सके,
वे नदी की बीच धारा में
पहुंच गये,
वहां बहाव तेज था,
पांव के नीचे की
मिट्टी खिसकने लगी।
वे खुश हुए
चलो कुछ न कुछ
हथिया ही लें,
गंगा न सही
जमुना में ही नहा लें।
मगर बात उल्टी पड़ गई
उस बहाव में अपने को खूब रोका
पर बात नहीं बनी।
राजनीति में विपरीत लहर की
तरह नदी में भी
ऐसी लहर आई कि
वे एकबार खड़े हुए
फिर बैठ गये।
दूसरी बार फिर खड़े हुए
और फिर बैठ गये।
तीसरी बार जैसे चुनाव में डूबते थे
वैसे ही नदी में डूब गये।

- हरमन चौहान

जांको राखै साइयां मार सकै ना कोय

जयसमंद क्षेत्र में 13 जुलाई को भैड़ों के रेवड़ को बचाने के प्रयास में बारातियों से भरी बस सड़क की दीवार तोड़कर 40 फीट गहरी खाई में लटक गई। बस में 30 बाराती सवार थे जिन्होंने खिड़कियों से कूदकर जान बचाई। हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई। बरात अदवास से चावण्ड जा रही थी।

जैथलियाजी ने लॉ की तुला पर लेखन तोला

जुगलकिशोरजी जैथलिया से मेरा कोई संपर्क और पत्राचार नहीं रहा पर ओंकारश्री से उनके बारे में, राजस्थानी भाषा के प्रति उनके लगाव, उनके पुस्तकीय प्रेम, साहित्यिक अभिरुचि, विद्वानों से मेलमिलाप तथा मिलनसारिता को लेकर विस्तार से जानने को मिला। राजस्थान परिषद से मेरा पुराना संबंध रहा है। उसके द्वारा प्रकाशित स्मारिका में भी मैं छपता रहा पर जैथलियाजी जब उसके संपादक बने तब उनसे जो पत्राचार प्रारंभ हुआ वही बड़ा उलझन भरा बना।

उन्होंने प्रताप संबंधी एक लेख चाहने बाबत् लिखा तो मैंने लेख भेज दिया लेकिन उस लेख के कई स्थलों पर उन्होंने अपनी असहमति जाहिर करते उस लेखन का प्रमाण और संदर्भ चाहा और जब मुझे यह लिखा कि मैं अपने लेखन के प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर कर भेजूं तो मुझे यह बात सर्वथा अनुचित लगी। साहित्य कोई वकालात की जिरह नहीं है जिसे आप मनमाने ढंग से उल्थाकर उल्टी-सीधी पैरवी का पैबंद बना दें। फिर कोई भी लेखक इतना बंध कर क्यों छपना चाहेगा। लेखक कोई उस ऐंडी गाय की तरह थोड़े ही है जिसका दूध निकालने के लिए आप नेजणे से उसके इतने कट्ठे पांव बांध दें कि गाय हिल भी नहीं पाये और दूध देने के लिए मजबूर हो जाय।

यहां उनके द्वारा उठाये गये मुद्दे और जवाब में मेरे द्वारा भेजे गए पत्र के मुख्य अंश दिये जा रहे हैं लेकिन तब भी अच्छा पक्ष यह रहा कि उन्होंने लेख प्रकाशित किया और सम्मानस्वरूप उसका पारिश्रमिक भी भेजा। इस घटना के बाद अनायास ही कोलकाता की एक संगोष्ठी में उनसे मिलना हुआ तो वे सर्वथा नये रूप में मिले। आत्मीयता से लबालब ताजगी लिए। लगा कि ये जैथलियाजी वे नहीं हैं। उन्होंने अपने जीवन-परिवेश और राजस्थान की छोटी खाटू में उनके द्वारा संस्थापित समृद्ध पुस्तकालय का जिक्र किया और देश के ख्यात रचनाकारों को वहां ले जाने का गौरवपूर्ण बखान किया। एक समारोह में मुझे भी बुलाने का प्रस्ताव किया।

17 दिसंबर 2009 ई.

आदरणीय डॉ. भानावतजी,

सादर नमस्कार।

दो दिन पूर्व आपका लेख 'महाराणा प्रताप नवीन शोध दृष्टि' मिला, धन्यवाद। निम्न बातों पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा-

(1) लेख में आदिवासी शब्द की उत्पत्ति के बारे में आपने एक नई सूचना दी है। इसका अन्यत्र भी कहीं उल्लेख है क्या? यदि संदर्भ हो तो उसका उल्लेख लाभकर होगा।

(2) पृष्ठ 3 पर आपने लिखा है कि हल्दीघाटी का युद्ध प्रताप का अंतिम युद्ध था....। कृपया स्पष्ट करने की कृपा करें।

(3) पृष्ठ 4 पर मानसिंह को मृत्यु बाद लोकदेवता कल्लाजी के सेनापति होने का उल्लेख है। सेनापति कैसे हुए यह स्पष्ट नहीं है।

(4) भाव पड़ने वाली बात को लोग सहज ही स्वीकृति नहीं देंगे, फिर भी आप इसे उल्लेख कर रहे हैं तो चर्चा एवं वाद-विवाद होगा। ऐसे लेख पर आपके हस्ताक्षर अवश्य चाहिए, सभी पृष्ठों पर। यह विषय अत्यंत गंभीर है।

(5) प्रताप से ही 'दीवानी' वाली बात प्रारंभ होने का आपने उल्लेख किया है। महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के प्रकाशन में इस प्रथा का बप्पा रावल से प्रारंभ होने का उल्लेख है, कृपया प्रकाश डालें।

आशा है, आप इसे अन्यथा नहीं लेंगे एवं शीघ्र खुलासा करेंगे। एक प्रति हस्ताक्षर करके भिजवाने की भी कृपा करायेंगे।

भवदीय

जुगलकिशोर जैथलिया

इस पत्र के उत्तर में मैंने 6 जनवरी 2010 को उन्हें लिखा-

श्रीयुत् जैथलियाजी,

सादर वन्दे

आपका 17 दिसंबर का पत्र मिला। सत्य वही नहीं है जो कहा अथवा लिखा जा चुका है। निरंतर शोध की प्रक्रिया जारी रहने पर कई नये सत्य-तथ्य उद्घाटित होते रहते हैं इसलिए हमारे ही सोच में परिवर्धन करना पड़ेगा अन्यथा रिसर्च का अर्थ ही क्या होगा।

मेरा समग्र लेखन ही पूर्णतया लोक का आधार लिए है। बहुत सारी विधाओं पर मैंने ही प्रथम बार लिखा है और उन विधाओं को लोक में देखा-परखा भी जा सकता है। आपकी सहमति मेरे लेखन से हो, यह आवश्यक नहीं है। उसमें निरंतर मंथन होते रहना चाहिए। मेरा भी यह दावा कभी नहीं रहा कि जो मैं लिख रहा हूं वही सत्य है। ऐसा दावा किसी लेखक का नहीं होना चाहिए। इतिहास वही नहीं है जो पट्टे परवानों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों और हस्तलिखित ग्रंथों में कैद है। कंठासीन साहित्य में भी जो बहुत सारी कथनी सुनने को मिलती है उसके आधार पर भी हमारी शोध-दृष्टि को बोधगम्य बनानी होगी।

मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास किसी ने नहीं लिखा और पूर्व में जो कुछ लिखा गया उसे भी नई दृष्टि से देखना होगा। जिन्होंने लिखा उन्होंने भी अपना मत बदला है और कुछ चलताऊ भी लिखा है। अभी-अभी डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' का मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास निकला है। करीब एक हजार फुटनोट देकर उन्होंने कई बातें जो कही गई उन्हें निराधार बताईं और पुनर्विचार करने का उल्लेख दिया है।

प्रताप ने जिस हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा, वस्तुत: युद्ध के नाम से तो वही उनका अंतिम युद्ध था। बाकी लड़ाइयां उस युद्ध की श्रेणी में नहीं है। मेरा लेख छपे ही, इसके लिए मुझे कोई शपथपत्र नहीं लिखना है। उसे देना, नहीं देना आपका स्वतंत्र अधिकार है। लेखक का वैसे भी कोई आग्रह नहीं होना चाहिए।

आपका

डॉ. महेंद्र भानावत

जगह-जगह शिक्षा-मंदिर हों : मणिप्रभसागर

जहां आवश्यक हो, जिस गांव में मंदिर न हों, वहां मंदिर अवश्य बनना चाहिये क्योंकि मंदिर हमारी मूल संस्कृति है लेकिन अनावश्यक मंदिरों के लगातार निर्माण के स्थान पर हमें गली-गली शिक्षा-मंदिरों का निर्माण करना चाहिए। इससे एक संस्कारी मानव का निर्माण होगा, तो धर्म भी सुरक्षित रहेगा, समाज भी।

पुराने जीर्णशीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार अवश्य होना चाहिये। जीर्णोद्धार का अर्थ है- प्राचीनता को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखते हुए उसे स्थायी रूप देना। नवनिर्माण को जीर्णोद्धार नहीं कहा जा सकता। आजकल अपने नाम के लिए पुराने मंदिरों को सर्वथा ध्वस्त कर उनका प्राचीन स्वरूप नष्ट कर उनके पुरातात्विक मूल्यों को सर्वथा नजरअंदाज कर जो नये निर्माण का रूप नजर आता है, निश्चित ही वह इतिहास समाप्त करने का षड़यंत्र है।

(ईसवाल, उदयपुर में 10 जून 2008 को पत्रकारों के बीच उद्‌बोधन)

मेरे लेखन की जड़ें राजस्थान में : नंद चतुर्वेदी

राजस्थान ही मेरी शक्ति का केन्द्र है। मैं यहीं अपने लेखन की जड़ें तलाश करता हूं। जब राजस्थान बड़ा और महत्वपूर्ण होगा, मैं अपनेआप ही बड़ा और महत्वपूर्ण हो जाऊंगा। मैंने 'सप्त किरण' के प्रकाशन की प्रेरणा अज्ञेय के 'तार सप्तक' से ग्रहण नहीं की बल्कि जब कोई राजस्थान के कृतित्व पर ध्यान देने वाला ही नहीं था और प्रकाशक पाठ्य पुस्तकों की टोह में लगे थे तब अपने प्रांत के लेखन को रेखांकित करने का मुझे कोई दूसरा उपाय नजर नहीं आया और मैंने सप्त किरण प्रकाशन की सहयोगी योजना पर विचार केन्द्रित किया। प्रत्येक कवि से 25 रूपया लेकर 275 रूपया एकत्र किया तब भी काम नहीं चला। यह तो ज्ञान भारिल्ल के पिता पं. शोभाचंद भारिल्ल की ही कृपा थी कि उनके परिचय के कारण सप्त किरण प्रकाशित हो सकी।

कभी-कभी ऐसा समय भी आता है जब एक लेखक को अपनी जिंदगी में उद्दंडता दिखाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। मुझे यह कहने में न कोई लज्जा है न संकोच कि अपने प्रांत के लेखन को प्रकाश में लाने के लिए कई बार उसी उद्दंडता से काम लिया लेकिन यह उद्दंडता आत्मरक्षा के प्रसंग में ही थी।

जब 'बिंदु' में मैंने लिखा कि हम उत्तरप्रदेश की मंडियां नहीं होंगे तब भी कोई प्रांतीय संकीर्णता नहीं थी। केवल रोष था जो अपने प्रांत की साहित्यिक उपेक्षा के प्रति आवश्यक और उचित था। अगर हिन्दी में केन्द्रीय वृत्ति पैदा न हुई होती तो साहित्य-इतिहास में हमारा, हमारे प्रांत का, हमारे प्रांत के लेखकों का नाम अंधेरे में विलुप्त नहीं होता।

(78वें जन्मोत्सव पर व्यक्त उद्‌गार)

टापरी जो घर है

मैं जानता हूं
अरावली के इन
बीहड़ मंगरों में
कैसे बनती है टापरी।
टापरी जो घर है, सफर है

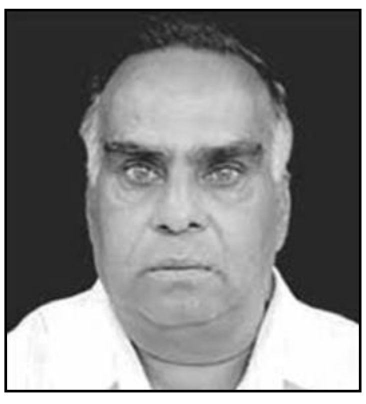

जिंदगी में भाग्य से आगे
पुरूषार्थ दिखाने का
पूरी शक्ति लगाकर
मंगरे की खड़ी चढ़ाई
पर चढ़ जाने का।

ये अरावली का
रांकड़-कांकड़ देता है
घास-फूस ; डांडे-वलीण्डे,
गारा-गोबर ; पानी पत्थर
टापरी खड़ी करने
आंगन-दीवारें बनाने
छान-छत ढकने के लिए।
टापरी में
सदैव बना ही रहता डर
वर्षाकाल में
दीवारें ढहने-बहने का,
सर्दी में ठंडी बयार,
ग्रीष्म में लू की मार।
हे जगत के स्वामी
केवल आप ही हो रक्षक
क्योंकि जब तक है टापरी
घर गृहस्थी है हरी भरी
मत छीनो मेरा हक।

-डॉ. रमेश 'मयंक'

शिरीन जकीउद्दीन ने जीता उदयपुर स्टार शैफ खिताब

उदयपुर। मात्र आधे घण्टे में सरप्राईज तौर पर मिले मसालों और चीज़ों से उसे अपनी रैसेपी से तीन घण्टों में तैयार कर नामी गिरामी शैफ को खिला उदयपुर स्टार शैफ का खिताब जितना आसान काम नही था लेकिन उदयपुर की शिरीन जकीउद्दीन ने अपने खाने बनाने के शौक को अपने जूनन से खिताब में बदल दिया। शौर्यगढ़ रिसोर्ट और स्पा द्वारा आयोजित फूड फेस्टिवल में प्रतियोगिता जीतने के बाद अब शिरीन की पहचान उदयपुर स्टार शैफ के रूप हैं। इसी प्रकार उदयपुर स्टार शैफ की रनर अप रश्मि अचवानी रही।

मैनेजर रूपम सरकार ने बताया कि प्रतियोगिता की विजेता को शौर्यगढ़ रिसोर्ट की ओर से 21000 रूपये का चैक, शील्ड व सेलिब्रिटी शैफ हरपाल सिंह सोखी

द्वारा हस्ताक्षरयुक्त सर्टिफिकेट, रनर अप को 11000 रूपये का चैक, शील्ड व सर्टिफिकेट अतिथियों शौर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा के निदेशक चिराग मारू, उपनिदेशक पर्यटन सुमिता सरोत्र, शैफ हरपाल सिंह सोखी, शैफ सुधीर पाई द्वारा प्रदान किये गये। इस प्रतियोगिता में उदयपुर की 10 प्रतिभाओं का चयन किया गया था, विजेताओं के साथ ही अन्य 8 प्रतिभागियों को भी शील्ड व सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।

शौर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा में आयोजित किये फूड फेस्टिवल के तीसरे दिन बड़ौदा की शैफ ट्विंकल गोखानी ने किड्स कुकिंग वर्कशॉप में खास तौर पर बच्चों के लिये चॉकलेट और बेकरी के गुर सिखाएं जिसमें बच्चों ने उत्साह से चॉकलेट और बेकरी के व्यंजन बनाने सिखे। वहीं शैफ हरपाल सिंह सोखी की सेलिब्रीटी वर्कशॉप में उन्होंने इण्डियन कुज़िन को घर में सरलता से बनायें जा सकने वाले व्यंजनों के गुर सिखाएं। सोखी के कॉर्न निम्बलेट्स, चपाती पिज्जा सोया शामी कबाब, पनीर नजाकत, नूडल्स और रेज़ियन रोल पराठें को मौजूद स्वाद के शौकिनों ने खासा पसंद किया। अवार्ड सेरेमनी के बाद ही प्रथम पांच में अपना मुकाम रखाने वाली मिक्सोलॉजीस्ट एमी बी श्रॉफ द्वारा प्रदर्शित क्रिस्टल और फायर जगलींग आकर्षण का केन्द्र रही। उदयपुर स्टार शैफ प्रतियोगिता में मुम्बई इन के शैफ सुधीर पाई, शैफ विमल धर और शैफ रूपम सरकार निर्णायक थे।

भारत व्यंजनों का देश : सोखी

उदयपुर। अपने फ्यूजन फूड के लिए देश ही नहीं विदेशों में पहचाने जाने वाले सेलिब्रिटी शैफ हरपाल सिंह सोखी का कहना है कि भारत व्यंजनों का देश है जिसके हर शहर की हर गली में अनूठा स्वाद बसता है। उदयपुर स्टार शैफ जैसी प्रतियोगिताएं घर की गृहणियों को अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। सोखी ने यह बात शोर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा द्वारा अपनी दूसरी वर्षगांठ पर

आयोजित फूड फेस्टिवल में पत्रकार वार्ता में कही। सोखी ने कहा कि राजस्थान के व्यंजन पूरे देश में प्रसिद्ध हैं। सोखी कई फूड शो में नियमित रूप से अपने व्यंजनों का प्रदर्शन करते हैं जिन्हें आसानी से सीख कर घर में बनाया जा सकता है।

शोर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा के महाप्रबंधक रूपम सरकार ने बताया कि फूड फेस्टिवल में उदयपुर स्टार शैफ का फाईनल तथा हेल्थ फूड वर्कशॉप का आयोजन किया गया। हेल्थ फूड वर्कशॉप में होलीडे इन मुम्बई के सुधीर पाई ने कांटिनेंटल व्यंजनों का सजीव प्रदर्शन किया। इसमें सुधीर पाई ने पालक शौरबा, मकई का शौरबा, लेमन कोरियेंडर सूप, गेजपाचो के साथ ही अलग-अलग प्रकार के सलाद, मेन कोर्स में पनीर, मशरूम और स्टफ वेजीटेबल की विधियां समझाते हुए व्यंजन बनाए। मुम्बई के सुधीर पाई ने कहा कि हर व्यक्ति अपनी संस्कृति और उम्र के अनुसार खाना खाना पसंद करता है लेकिन जो मन को भा जाए वही स्वाद है। उन्होंने एक सवाल पर कहा कि बाजार में अलग-अलग किस्म के तेल उपलब्ध हैं लेकिन बदलाव खाने में नहीं, दिनचर्या और रहन सहन में होनी चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ रहे। सुधीर पाई कूजिन को नई-नई तरह से प्रस्तुत करने में माहिर हैं।

सेवा तो नारायण सेवा

-वसन्त निरगुणे

हे प्रभु!
मुझे एक हाथ से,
एक पैर से,
दिव्यांग भले ही बना देना
पर मस्तिष्क से
दिव्यांग मत बनाना।
मैं समझदार हो जाऊं,
तो हाथ का
और पांव का
नारायण सेवा जैसी समर्पित संस्था में
खुद जाकर इलाज करा सकूं।
अपने हाथ से कुछ काम कर सकूं।
मैं जान सकूं,
दिव्यांगता अभिशाप नहीं है,
और नहीं है अपराध।
वह तो एक चुनौती है,
जीवन संघर्ष की।
इस चुनौती को
मैं आत्मविश्वास से
जीत लूंगा।
तब तुम्हीं कहोगे,
एक दिन सारी दुनिया कह उठेगी
दिव्यांगता अभिशाप नहीं है,
और न भूल है भगवान की,
जिसने इतनी सुंदर सृष्टि बनाई है।
उसमें मेरी भी थोड़ी सी जगह है।।

(30 दिसंबर 2007 को उदयपुर में लिखित)

छात्र परिषद का शपथ ग्रहण आयोजित

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल में स्थापना दिवस एवं छात्र परिषद शपथ ग्रहण समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कर्नल हरीश चंदोक थे। कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने शास्त्रीय संगीत, पाश्चात्य संगीत एवं समूह गान की प्रस्तुतियां दी। स्थापना दिवस के अवसर पर विद्यालय में छात्र परिषद की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह हुआ। विद्यालय के प्रधान छात्र हर्ष शर्मा एवं प्रधान छात्रा सिद्धि बाठिया को चुना गया। कार्यक्रम में छात्र हरित सरूपरिया ने विद्यालय में होने वाली गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नल हरीश चंदोक ने छात्रों को सामान्य ज्ञान, जीवन में खेल तथा योग के महत्व से अवगत कराया तथा जीवन में सभी को अनुशासित रहकर देश सेवा हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जीवन में सभी को अनुशासित रहकर देश सेवा हेतु तत्पर रहना चाहिये। अंत में प्रधान छात्रा सिद्धि बाठिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड) विश्वविद्यालय

प्रतापनगर, उदयपुर-313001 (राजस्थान) फोन : 0294-2492441 फैक्स 0294-2492440

Email : admisssions@jrnrvu.edu.in

प्रवेश प्रारम्भ : सत्र 2016-17

फैकल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट (एफ.एम.एस.) फोन : 0294-3296232, 2490632

- मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एम.बी.ए.)
- मास्टर ऑफ ह्यूमन रिसोर्सेज मैनेजमेन्ट (एम.एच.आर.एम.) • एम.बी.ए. एग्जीक्यूटिव

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय फोन : 0294-2413029, 2410829 फैकल्टी ऑफ सोशल साइन्सेज एण्ड ह्यूमिनिटीज

स्नातकोत्तर

- एम.फिल. - अंग्रेजी, हिन्दी, समाजशास्त्र, संस्कृत, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, इतिहास
- एम.ए. - अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगोल, समाजशास्त्र, इतिहास स्नातक (बी.ए.)
- डिप्लोमा कोर्सेज - • जी.आई.एस. एवं रिमोट सेन्सिंग • प्रोफिशिएन्सी इन इंग्लिश एवं कम्युनिकेशन स्किल • सर्टिफिकेट कोर्स-स्पोकन इंग्लिश • बी.जे.एम.सी.

फैकल्टी ऑफ कॉमर्स, मोबाइल : 98290-77724

- एम.फिल. - बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन और एकाउन्टिंग
- एम.कॉम. - ए.बी.एस.टी., बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
- स्नातक (बी.कॉम.)
- डिप्लोमा कोर्सेज - इंश्योरेन्स एवं बैंकिंग मैनेजमेन्ट मार्केटिंग, सेल्स मैनेजमेन्ट टेक्सेशन कम्प्यूटर बेसिक्स एवं एकाउन्टिंग

ज्योतिष विज्ञान विभाग, मो. 9460030605

- एम.ए.- ज्योतिर्विज्ञान • प्रमाण पत्र - पूजा पद्धति एवं कर्म काण्ड -
- डिप्लोमा ज्योतिष एवं वास्तु • प्रमाण पत्र - भारतीय ज्योतिष एवं हस्तरेखा विज्ञान

सायंकालीन महाविद्यालय, मोबाइल : 9414166432

- पीजी डिप्लोमा - गाइडेंस एवं काउंसलिंग • एम.ए./एम.एस.सी.(साइकोलॉजी)
- एम.ए. - हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिक शास्त्र, लोक प्रशासन, भूगोल
- एम.कॉम. - एकाउन्टेंसी/ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन • बी.ए./बी.कॉम.
- पी.जी.डिप्लोमा - योग शिक्षा (9352500445)
- प्रमाण पत्र कार्यक्रम - फ्रेंच/जर्मन/स्पेनिश भाषा

डिपार्टमेन्ट ऑफ बिजनेस मैनेजमेन्ट स्टडीज, फोन नं. 0294-2413548

- बेचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन - (बी.बी.ए.)
- मास्टर ऑफ इन्टरनेशनल बिजनेस - (एम.आई.बी.)
- मास्टर ऑफ एनजीओ मैनेजमेन्ट
- पी.जी. डिप्लोमा - ट्रेनिंग एवं डवलपमेन्ट

शारीरिक शिक्षा विभाग, मोबाइल : 98299 43205, 9352500445

- मास्टर इन फिजिकल एजुकेशन • एम.ए.(योग शिक्षा)

डिपार्टमेन्ट ऑफ लॉ, मोबाइल : 9414343363, 9928246547

- एल.एल.बी. (3 वर्षीय डिग्री कोर्स) • बी.ए. - एल.एल.बी.(5 वर्षीय इंटीग्रेटेड कोर्स)
- एल.एल.एम.(2 वर्षीय डिग्री कोर्स) • पी.जी. डिप्लोमा इन लेबर लॉ (1 वर्ष)
- पी.जी. डिप्लोमा इन लॉ एण्ड फॉरेंसिक साइंस (1 वर्ष) • साइबर लॉ में प्रमाण पत्र कार्यक्रम (6 माह)

फैकल्टी ऑफ कम्प्यूटर साइंस एण्ड इनफोरमेशन टेक्नोलॉजी (फोन : 2429422, 2494217, मोबाईल : 9887285752)

- एम.फिल. (कम्प्यूटर साइंस) • एम.सी.ए. (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
- एम.एस.सी. (कम्प्यूटर साइंस) • पी.जी.डी.सी.ए.
- बीसीए (बेचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन) • बी.एस.सी. (कम्प्यूटर साइंस)
- एम.एस.सी. (ऑर्गेनिक केमिस्ट्री)

फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी मोबाइल 9829009878, फो. - 0294-2490210

- डिप्लोमा - सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग,
- इलेक्ट्रोनिक्स एवं कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग
- बी.एस.सी. - भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, गणित/जीव विज्ञान

इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान स्टडीज (साहित्य संस्थान) फो. - 0294-2491054

- एम.ए. - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaelogy)
- पी.जी. डिप्लोमा - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
- सर्टिफिकेट कोर्स - फ्रेंच/जर्मन लेंग्वेज

उदयपुर स्कूल ऑफ सोशियल वर्क (फो. - 0294-2491809)

- मास्टर ऑफ सोशल वर्क (MSW) • पी.जी. डिप्लोमा - एच.आर.एम.
- पी.जी. डिप्लोमा - एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट • पी.जी. डिप्लोमा - ग्रामीण विकास
- सड़क सुरक्षा प्रमाण-पत्र • मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एग्जीक्यूटिव)

डायरेक्ट्रेट ऑफ जनशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रम (फो. -2490723)

- लोक शिक्षण विभाग • कम्युनिटी सेन्टर डिपार्टमेन्ट • जनपद
- मंगलमूर्ति इंदिरा गांधी जनता कॉलेज • डिपार्टमेन्ट ऑफ लाइफ लाँग लर्निंग
- डिपार्टमेन्ट ऑफ रूरल टेक्नोलॉजी (बी.एस.सी. रूरल टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेन्ट)
- डिपार्टमेन्ट ऑफ वूमन स्टडीज • बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर) (फोन 2490234)
- बेचलर इन जेण्डर स्टडीज एण्ड टेक्नोलॉजी
- पी.जी. डिप्लोमा - जेण्डर स्टडीज एण्ड टेक्नोलॉजी • डिप्लोमा - कम्प्यूटर एप्लीकेशन्स
- सर्टिफिकेट कोर्स - पर्सनालिटी डवलपमेन्ट एवं कम्यूनिकेशन स्किल
- महाराणा कुम्भा संगीत कला केन्द्र- संगीत भूषण, संगीत प्रभाकर

फैकल्टी ऑफ एजुकेशन लोकमान्य तिलक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, डबोक (फो. 0294-2655327, 2657753)

- एम.फिल • एम.एड. • एम.ए. (एजुकेशन) • बी.एड. • बी.ए.-बी.एड. (इंटीग्रेटेड)
- बी.एड.(बाल विकास) • एस.टी.सी. • एम.पी.एड. • बी.एड.-एम.एड. (इंटीग्रेटेड)

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी कन्या महाविद्यालय, डबोक (फोन नं. 2655223, मो. 9460856658)

- बी.ए. • बी.कॉम.

फैकल्टी ऑफ मेडिसिन आर.वी. होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, डबोक (फो. 0294-2655974, 2655975, मोबाइल 09414156701, 09351343740)

- बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (बी.एच.एम.एस.)
- एम.डी. (होम्योपैथी) पेडियाट्रिक्स एण्ड प्रेक्टिस ऑफ मेडिसन (Subject to approval of Govt. of India (AYUSH)

डिपार्टमेन्ट ऑफ फिजियोथैरेपी (फो. 0294-2656271, मोबाइल 9414234293)

- मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी • बेचलर ऑफ फिजियोथैरेपी
- डिप्लोमा- कम्यूनिटी बेस्ड रिहेबिलिटेशन

उपरोक्त पाठ्यक्रमों हेतु अधिक जानकारी यथा न्यूनतम अंक, फीस आदि के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट देखें:

www.jrnrvu.edu.in रजिस्ट्रार

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।